UGC Journal No. (Old) 40942,
Peer- Reviewed Research Journal
Impact Factor 5.125 (IIFS) ISSN 0973-3914
Vol.- 37, Hindi Edition, Year-19, July - Dec. 2022

भारतीय अर्थव्यवस्था और वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ: एक विश्लेषण

• बिन्ध्याचल साह

सारांश- कोरोना महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाधित हुई है। इससे खाद्यान्नों, ईंधनों, रसायनिक उर्वरकों और गैस की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि हुई है, जिसके कारण पूरे विश्व में मुद्रास्फीति तेजी से बढ़ रही है। साथ ही, अनिश्चितता के कारण विनिमय दर अस्थिर हो गया है। केंद्रीय बैंक अपने मुख्य दरों को मुद्रास्फीति नियंत्रित करने के लिए लगातार बढ़ाते जा रहे हैं। इससे आमजन प्रभावित हो रहे हैं। भारत में भी इसका गंभीर असर देखने को मिल रहा है। भारत में खुदरा मुद्रास्फीति लगातार 6 प्रतिशत के ऊपर बनी हुई है। इससे निपटने के लिए केंद्रीय बैंक रेपो रेट को बढ़ाते हुए 6.25 प्रतिशत तक पहुंच गया है। इससे एक ओर जहां कर्ज महंगा हुआ है। और निजी निवेश हतोत्साहित हो रहा है, वहीं दूसरी ओर, अर्थव्यवस्था में गिरावट दर्ज की जा रही है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 2022 के लिए भारत का विकास दर 7.4 प्रतिशत से घटाकर 6.8 प्रतिशत कर दिया है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। इसमें बढ़ती मुद्रास्फीति, घटता विदेशी मुद्रा भंडार, बढ़ता व्यापार घाटा, चालू-खाता घाटा एवं राजकोषीय घाटा, रुपए का मूल्य-ह्रास, बढ़ती बेरोजगारी आदि प्रमुख हैं।

मुख्य शब्द - मुद्रास्फीति, खाद्य-श्रृंखला, मूल्य-ह्रास, विदेशी मुद्रा-भंडार, चालू खाता-घाटा, विनिमय-दर

प्रस्तावना- वैश्वीकरण के कारण सभी देश एक-दूसरे के साथ जुड़ गए हैं। विश्व में कहीं भी कोई हलचल होती है, तो इसका प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ता है, चाहे वह युद्ध हो, महामारी हो या फिर कोई आर्थिक या प्राकृतिक घटना। विगत दिनों हमने इसे देखा और महसूस किया है। कोविड महामारी से जब पूरी दुनिया परेशान थी, तो इससे निपटने के लिए बृहद पैमाने पर लॉकडाउन को अपनाया गया, जिससे आर्थिक गतिविधियां ठप्प पड़ गई और आयात-निर्यात बाधित होने से पूरा विश्व मंदी की चपेट में आ गया। कोरोना महामारी के प्रभाव से विश्व अभी बाहर निकल ही रहा था कि रूस-यूक्रेन में युद्ध शुरू हो गया। इस युद्ध के कारण पूरी दुनियाँ में ईंधन, गैस और खाद्यान्नों की कीमतों में आग लगी हुई है। इसकी आंच से कई सरकारों (श्रीलंका, ब्रिटेन, पाकिस्तान आदि) का तख्तापलट

• सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, बलिराम भगत महाविद्यालय समस्तीपुर, बिहार

हो चुका है तो कई देशों (नेपाल, बंग्लादेश, फ्रांस, जर्मनी आदि) में आम जनता सरकार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन कर रही है। मुख्यतः आपूर्ति श्रृंखला के बाधित होने से सभी देशों में घरेलू कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं। इससे निपटने के लिए वहां के केंद्रीय बैंक लगातार अपने मुख्य दरों को बढ़ा रहे हैं। इससे लोगों की क्रय-क्षमता निरंतर गिर रही है, निजी निवेश हतोत्साहित हो रहा है और उद्योग-धंधों के वृद्धि दर पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। कुल मिलाकर पूरे विश्व का ग्रोथ रेट गिर रहा है। भारत का भी जीडीपी वृद्धि दर निरंतर गिर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, रेटिंग एजेंसियां और शोध संस्थान भारत के विकास दर को निरंतर घटाते जा रहे हैं। भारत की चुनौतियां अलग तरह की हैं। हम एक विकासशील अर्थव्यवस्था वाले विशाल और विश्व में दूसरे नंबर की जनसंख्या वाला देश हैं। देश में अभी भी गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, भाग्यवादिता और अंधविश्वास विद्यमान है। देश में जन्म-दर एवं मृत्यु-दर अधिक है। बचत-दर, पूंजी-निर्माण दर और निवेश-दर विकसित देशों की अपेक्षा बहुत हीं कम है। देश में उद्यमिता, नई तकनीक और शोध का अभाव है। अभी भी हम पूंजी और तकनीक के लिए विकसित देशों पर निर्भर है। मानसून की अनिश्चितता, कृषि क्षेत्र के माध्यम से एक बड़ी आबादी और राष्ट्र को प्रभावित करती है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मानकों और सूचकांकों में हम बहुत पीछे हैं। इस स्थिति में वैश्विक अनिश्चितता, प्राकृतिक आपदाओं, वर्चस्व के लिए राष्ट्रों के बीच संघर्षों, वैश्विक आर्थिक घटनाओं एवं निर्णयों का असर हमारी विकासशील अर्थव्यवस्था पर तीव्रता से पड़ रहा हैं। वर्तमान वैश्विक घटनाक्रमों और अन्यान्य कारणों से भारतीय अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई है। हमारी मुद्रा का निरंतर मूल्यह्रास होता जा रहा हैं। इससे निपटने के लिए केंद्रीय बैंक डॉलर को बाजार में बेच रहा है। साथ हीं, बढ़ती घरेलू मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए रेपो रेट को बढ़ाते जा रहा है। इसका असर पूंजी की मांग, निवेश और आर्थिक गतिविधियों पर पड़ रहा है। अमेरिका के केंद्रीय बैंक द्वारा फेड दरों को लगातार बढ़ाने के कारण डॉलर निरंतर मजबूत और आकर्षक विकल्प बनता जा रहा है, जिससे विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक अपने निवेश को भारी मात्रा में निकाल कर ले जा रहे हैं। इससे विदेशी मुद्रा भंडार (डॉलर) निरंतर कम होते जा रहा है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अवरोध के कारण देश के आयात-निर्यात में असंतुलित वृद्धि होने से व्यापार-घाटा, चालू खाता-घाटा और राजकोषीय घाटा निरंतर बढ़ रहा है। सरकार इससे निपटने के लिए भारी मात्रा में कर्ज ले रही है और विनिवेश को बढ़ावा दे रही हैं। देश में बढ़ती आबादी, गुणवत्तापूर्ण व्यवसायिक शिक्षा, उद्यमिता, पूंजी निवेश, नवन्मेष; शोध आदि की कमी, सरकारी उदासीनता एवं संकल्प हीनता तथा उचित नियोजन एवं प्रबंधन के अभाव के कारण बेरोजगारी की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है। विकसित भारत और मजबूत भारत बनने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हमें पूरी रणनीति, कार्य-योजना एवं संकल्प के साथ उपरोक्त चुनौतियों से निपटना और आगे बढ़ना होगा।

अध्ययन का उद्देश्य-

- वर्तमान वैश्विक आर्थिक चुनौतियों को जानना।
- वर्तमान वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के लिए उत्तरदायी कारणों को जानना।

- भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष उत्पन्न वर्तमान आर्थिक चुनौतियों और इसके कारणों को जानना।
- वर्तमान आर्थिक चुनौतियों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों को जानना।
- वर्तमान आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिए उठाये गये कदमों को जानना और उचित सुझाव देना।

शोध विधि एवं प्रविधि- यह शोध पत्र पूर्णतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए विभिन्न आर्थिक और वित्तीय संस्थानों द्वारा समय-समय पर जारी आंकड़ों, रिपोर्टों, पत्र-पत्रिकाओं के आलेखों, अखबारों तथा सोशल मीडिया प्लेट फॉर्मस, वेबसाईट आदि का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत आलेख में गणितीय अंकों, दशमलव, प्रतिशत आदि का प्रयोग किया गया है। इस शोधपत्र में विश्लेषणात्मक अप्रोच को अपनाया गया हैं।

परिकल्पना- वर्तमान वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के लिए कोरोना महामारी, रूस-यूक्रेन युद्ध और स्वार्थपूर्ण नीतियों के कारण बाधित आपूर्ति श्रृंखला जिम्मेवार है। भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष उत्पन्न वर्तमान आर्थिक चुनौतियों के लिए वैश्विक कारण उत्तरदायी है। भारत की अर्थव्यवस्था का आधार मजबूत है और वह आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है।

तथ्य और आंकड़े- वैश्विक अनिश्चितता के कारण प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था कठिनाई के दौर से गुजर रही है। लगभग सभी देशों का विकास दर गिर रहा है और महंगाई एवं बेरोजगारी बढ़ रही है। वैश्विक उथल-पुथल का प्रभाव भारत पर भी पड़ा है। कोरोना महामारी के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही थी, लेकिन कोरोना वायरस से निपटने के लिए अपनाए गये ल,कडाउन के कारण आर्थिक गतिविधियां ठप्प पड़ गई और आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो गई। इसके बाद रूस- यूक्रेन युद्ध ने आग में घी डालने का काम किया। साथ हीं, ओपेक देशों द्वारा कच्चे तेल के उत्पादन में कटौती के कारण भी महंगाई को बल मिला। फलतः देशों में महंगाई बढ़ती गई, जिससे निपटने के लिए सरकारें ब्याज दर बढ़ाती चली गईं।अनेक देशों की तरह भारतीय अर्थव्यवस्था भी आज अनेक चुनौतियों से गुजर रही है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष उपस्थित कुछ प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार हैं-

बढ़ती मुद्रास्फीति- बाधित आपूर्ति श्रृंखला, मॉनसून की अनिश्चितता, ओपेक देशों द्वारा तेल के उत्पादन में कटौती और महंगे होते कच्चे तेल आदि कारणों से घरेलू कीमतें तेजी से बढ़ रही है। कच्चा तेल जब महंगा होता है, तो वस्तुओं और सेवाओं की ढुलाई लागत बढ़ जाती है, जिससे उनकी कीमतों में वृद्धि होने लगती है। थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति सितंबर, 2022 में 10.7 प्रतिशत थी। 12 अक्टूबर, 2022 को जारी आंकड़ों के अनुसार उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर आधारित खुदरा महंगाई दर सितंबर, 2022 में बढ़कर 7.41 प्रतिशत हो गई है। एक साल पूर्व सितंबर, 2021 में यह 4. 5 प्रतिशत थी। खुदरा महंगाई दर पिछले 9 महीनों से भारतीय रिजर्व बैंक के 6 प्रतिशत के ऊपरी सीमा से ऊपर बनी हुई है। यही कारण है कि आरबीआई रेपो रेट को लगातार बढ़ाते

जा रहा है। वर्तमान में रेपो रेट 6.25 प्रतिशत तक जा पहुंचा है।

कोविड-19 और रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते बाधित हुई आपूर्ति श्रृंखला से खाद्यान्न कीमतों, ईंधन कीमतों, रासायनिक उर्वरकों की कीमतों और गैसों की कीमतों में भारी बढ़ोतरी हुई है। वैश्वीकरण के कारण विश्व की सभी अर्थव्यवस्थाएं एक-दूसरे से जुड़ी हुई है, जिस कारण प्रत्येक देश मुद्रास्फीति का सामना कर रहा है। मुद्रास्फीति से निपटने के लिए प्रत्येक देश के केंद्रीय बैंक अपने मुख्य ब्याज दरों को बढ़ाते जा रहे हैं। अमेरिकी केंद्रीय बैंक ने भी घरेलू मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए अपने फेड दरों को आक्रामक ढंग से बढ़ाया है। अमेरिका में महंगाई 40 वर्षों के उच्चतम स्तर पर जा पहुंची है। सितंबर, 2022 में वहां महंगाई दर 8.2 प्रतिशत पर पहुंच गई है। यह अगस्त, 2022 में 7.8 प्रतिशत पर थी। यही कारण है कि वहां का केंद्रीय बैंक ब्याज दरों को लगातार बढ़ा रहा है। अमेरिकी केंद्रीय बैंक महंगाई दर को 2 प्रतिशत पर लाने के लिए सितंबर, महीने में लगातार तीसरी बार फेड दरों में 0.75 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर चुका है।

क्रिसिल के मुख्य अर्थशास्त्री डीके जोशी के अनुसार, "ऊंची महंगाई दर से खासकर गरीबों की क्रय-शक्ति सिकुड़ जाएगी। कुल मिलाकर रुपए के टूटने से अर्थव्यवस्था पर काफी प्रतिकूल असर पड़ेगा।" बढ़ती महंगाई का बोझ उपभोक्ताओं पर कम करने के लिए भारत सरकार ने मई, 2022 में पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क में कटौती की थी, जिससे सरकारी खजाने पर 45,000 करोड़ों रुपए का बोझ पड़ा। इससे राजकोषीय घाटा समेत कुल राजस्व पर गंभीर असर पड़ा है। 12 अक्टूबर, 2022 को हुई केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में सरकार ने सरकारी तेल विपणन कंपनियों को रसोई गैस के घाटे की भरपाई के लिए 22 हजार करोड़ रुपए के आवेदन को मंजूरी दी। ये कंपनियां एलपीजी को बाजार दर से कम कीमत पर बेचकर घाटा उठा रहे हैं। मुद्रास्फीति नियंत्रण और लोगों की क्रय-क्षमता बनाए रखने के लिए सरकार सब्सिडी देकर बाजार दर से कम कीमत पर गैस उपलब्ध करा रही है। इस सब्सिडी का भार राजकोष पर हीं पड़ेगा।

रूपये का मूल्य ह्रास - 20 अक्टूबर, 2022 को रुपया डॉलर के मुकाबले गिरकर 83.1 के सर्वकालिक न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया। पिछले दो वर्षों में रुपए में 10 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट हो चुकी है। नवंबर, 2021 में यह ड,लर के मुकाबले 73.90 पर था। जुलाई, 2022 में यह पहली बार रु. 80 के पार चला गया। 24 फरवरी, 2022 को रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद से रुपया पर दबाव निरंतर बढ़ता गया है। यह ड,लर के मुकाबले 0.3 प्रतिशत से बढ़ कर अब तक लगभग 7 प्रतिशत तक टूट चुका है। रुपया गिरने का प्रमुख कारण विकसित देशों के निवेशकों द्वारा भारतीय शेयर बाजार से पैसा निकालना, रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण आपूर्ति श्रृंखला बाधित होना और जोखिम कम करने के लिए सोने की तरह ड,लर को जुटाने का चलन बढ़ना है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाधित होने के कारण खाद्यान्नों, गैस, ईंधन और रासायनिक उर्वरकों की कीमतों में भारी बढ़ोतरी हुई है। इससे घरेलू कीमतें तेजी से बढ़ रही है। घरेलू कीमतों को नियंत्रित करने के लिए अमेरिका सहित सभी देशों के केंद्रीय बैंक अपने प्रमुख दरों को निरंतर बढ़ा रहे हैं। अमेरिका का फेडरल रिजर्व बैंक ने भी फेड दरों को आक्रामक ढंग से बढ़ाया है। इससे भारत सहित उभरती अर्थव्यवस्थाओं से पूंजी का पलायन बड़े पैमाने

पर हुआ है। एनएसडीएल के डाटा के अनुसार विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने जनवरी 2022 से सितंबर, 2022 तक 30 अरब डॉलर (लगभग 2.4 लाख करोड़ रुपए) से ज्यादा की भारतीय परिसंपत्तियों को बेच दिया है, जो अब तक का रिकॉर्ड स्तर है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने अक्टूबर, 2022 के प्रथम दो सप्ताहों में भारतीय शेयर बाजार से 7458 करोड़ रुपये निकाले हैं। सितंबर, 2022 में 7600 करोड रुपए से अधिक की निकासी की गई। इस वित्त वर्ष में 14 अक्टूबर तक 1.76 लाख करोड़ रुपए की निकासी हो चुकी है।

निवेशकों का विश्वास डॉलर पर बढ़ने के कई कारण हैं। दुनिया में 85 प्रतिशत व्यापार अमेरिकी डॉलर में होता है। विश्व के केंद्रीय बैंकों में 64 प्रतिशत विदेशी करेंसी डॉलर के रूप में विद्यमान है। दुनिया में 39 प्रतिशत कर्ज अमेरिकी डॉलर में दिया जाता है। डॉलर को विश्व का सबसे सुरक्षित और स्थिर मुद्रा माना जाता है। यही कारण है कि निवेशक दूसरे देशों से अपनी पूंजी को निकालकर अधिक लाभ और सुरक्षा के लिए डॉलर (अमेरिका मुद्रा) में लगा रहे हैं। इससे डॉलर मजबूत हो रहा है और अन्य देशों की मुद्राएं टूट रही हैं।

रुपए के मूल्य- ह्रास से फायदा और नुकसान दोनों है। रुपया का मूल्य गिरने से एक ओर जहाँ व्यापारी वर्ग को फायदा होगा, विदेशी पर्यटकों के लिए भारत में घूमना सस्ता होगा, भारतीय मेडिकल टूरिज्म को लाभ होगा और विदेशों से डॉलर भेजना लाभप्रद होगा। वहीं दूसरी ओर, कच्चे तेल और सोने का आयात मूल्य बढ़ जाएगा। इससे वस्तुओं की कीमत बढ़ने से देश में महंगाई बढ़ेगी। विदेशी शिक्षा और भ्रमण दोनों महंगा हो जाएगा और देश में विदेशी निवेश घट जायेगा।

बढ़ता व्यापार घाटा- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाधित होने और डॉलर के सापेक्ष रूपये के टूटने के कारण आयात और निर्यात में असमानता बढ़ती जा रही है। ऐसा माना जाता है कि रुपए के गिरने से निर्यात में फायदा होता है। लेकिन भारत की लिए इसका सीमित लाभ है, क्योंकि हमारी विशाल अर्थव्यवस्था मुख्यत: आयात पर निर्भर है। हम अपनी जरूरतों का 80 प्रतिशत कच्चा तेल विदेशों से खरीदते हैं। सोना, उर्वरक, मशीनरी, पार्टस, कच्चामाल आदि का भारी मात्रा में आयात करते हैं। विदेशी कर्ज भी लेते हैं। रुपए के गिरने से आयात बिल और विदेशी कर्ज की लागत बढ़ जाती है। कोविड महामारी और वर्तमान वैश्विक अवरोधों के कारण लोगों की क्रय क्षमता गिरी है। इससे मांग कम हुई है। इसका असर निर्यात पर पड़ रहा है। तुलनात्मक रूप से हमारा आयात निरंतर बढ़ता जा रहा है, जिससे व्यापार घाटा बढ़ रहा है। व्यापार घाटा को पूरा करने के लिए सरकार बाजार से भारी मात्रा में कर्ज कर ले रही और विनिवेश को बढ़ावा दे रही है। साथ हीं, महंगाई को एक सीमा तक बनाए रखने के लिए मजबूर है।

वर्ष 2022 में अप्रैल से अगस्त तक निर्यात 17.68 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 193.51 बिलियन ड,लर हो गया, जबकि इसी अवधि में आयात में 45.74 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और यह 318 बिलियन ड,लर पर पहुंच गया। इस तरह, इस अवधि में व्यापार घाटा 124.52 बिलियन डॉलर हुआ। पिछले वित्त वर्ष 2021-22 के समान अवधि में व्यापार घाटा 53.78 बिलियन डॉलर था। भारत के वाणिज्यिक निर्यात में तेजी बनी हुई है।

वित्त वर्ष 2021-22 में यह 400 अरब डॉलर (32 लाख करोड़ रुपए) के पार चला गया। लेकिन व्यापार घाटा भी निरंतर बढ़ते जा रहा है। वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही में व्यापार घाटा 70.8 अरब डॉलर (5.6 लाख करोड़ रुपए) हो गया, जो कि वित्त वर्ष 2021-22 की पहली तिमाही में 31.4 अरब डॉलर (2.5 लाख करोड़ रुपए) था। ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही है कि इस वित्त वर्ष के अंत में यह रिकॉर्ड 250 अरब डॉलर (20 लाख करोड़ रुपए) या जीडीपी के 7.3 प्रतिशत तक बढ़ सकता है। इसका अर्थ है कि चालू खाते का घाटा (कैड) 3 प्रतिशत तक बढ़ सकता है। कैड में बढ़ोतरी और एफपीआइ के बिकवाली से रुपया और गर्त में जा सकता है। वित्त वर्ष 2022-23 में चालू खाता घाटा 115 बिलियन ड,लर यानी जीडीपी का 3.3 प्रतिशत रहने की संभावना है। राजकोषीय घाटा जीडीपी का लगभग 10: हो चुका है। इसमें लगभग 6.5 प्रतिशत केंद्र सरकार का और शेष राज्यों का हिस्सा है। वित्त वर्ष 2022-23 के बजट में 1.10 लाख करोड़ रुपए की अतिरिक्त मदद मुहैया कराई गई है। इससे कुल सब्सिडी मौजूदा वित्त वर्ष में बढ़कर 2.15 लाख करोड़ रुपए पहुंच गई है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के उप-निदेशक पावलोमाउरो के अनुसार-"भारत का कर्ज 2022 में जीडीपी के अनुपात में 84 प्रतिशत रहने का अनुमान है। यह कई उभरते देशों के मुकाबले अधिक है।"

घटता विदेशी मुद्रा भंडार- 3 दिसंबर, 2020 को देश का विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर था, जो 15 महीने के आयात बिल के बराबर था। लेकिन यह 8 जुलाई, 2020 को घटकर यह 600 अरब डॉलर पर आ गया, जिससे मात्र 10 महीने का आयात बिल ही चुकता किया जा सकता है। रूसी-यूक्रेन युद्ध शुरू होने के पहले (24 फरवरी, 2022) भारत के पास 630 अरब डॉलर (50.4 लाख करोड़ रुपए) का विदेशी मुद्रा भंडार था। यह 8 जुलाई, 2022 को कम होकर 580 अरब डॉलर (46.4 लाख करोड़ रुपए) रह गया। भारतीय रिजर्व बैंक ने 50 अरब डॉलर रुपए को बचाने के लिए बाजार में बेच डाला, ताकि वित्तीय अराजकता न फैले। विदेशी मुद्रा भंडार कम होने के कई कारण है, पहला, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों द्वारा अपने निवेश को निकाल कर डॉलर की ओर पलायन करना। दूसरा, उनके द्वारा नए निवेश के लिए वेट एंड वाच का नियम अपनाना। तीसरा, वैश्विक अनिश्चितता के कारण नये निवेश में सावधानी बरतना। चौथा, आरबीआई द्वारा रुपए के मूल्य ह्रास को रोकने के लिए बाजार में डॉलर को बेचना। पांचवा, आयात मूल्य और विदेशी कर्ज का लागत बढ़ना। छठा, निर्यात के अपेक्षा आयात का बढ़ना । सातवाँ, रूपया के मूल्यह्रास के कारण विदेशी शिक्षा, ईलाज, भ्रमण आदि महंगा होना। घटता विदेशी मुद्रा भंडार अनेक समस्याओं को जन्म दे सकता है।

विकास दर में गिरावट- अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 2023 के लिए वैश्विक आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान 2.9 प्रतिशत से घटाकर 2.7 प्रतिशत कर दिया है। वर्ष 2022 में इसके 3.2 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया है। वर्ष 2021 में यह 6 प्रतिशत था। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार वर्ष 2022 में अमेरिका का वृद्धि दर 1.6 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जो वर्ष 2023 में घटकर 1 प्रतिशत तक आ सकता है। वर्ष 2021 में यह वृद्धि दर 5.7 प्रतिशत था। अमेरिकी राष्ट्रपति ने भी देश में मंदी आने की आशंका व्यक्त की है। आईएमएफ ने चीन की अर्थव्यवस्था को वर्ष 2022 में 3.2 प्रतिशत की दर

से बढ़ने की उम्मीद जाहिर की है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने इसके लिए रूस-यूक्रेन युद्ध, आर्थिक मंदी की आहट, कोरोना का असर और बढ़ती ब्याज दरों को जिम्मेदार बताया है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भारत के जीडीपी ग्रोथ रेट का अनुमान भी घटा दिया है। वर्ष 2021 में भारत की जीडीपी ग्रोथ दर 8.7 प्रतिशत के मुकाबले 2022 के लिए 7.4 प्रतिशत से घटाकर 6.8 प्रतिशत कर दिया है। फिर भी यह पूरे विश्व में काफी अधिक है, क्योंकि इसी अवधि में चीन का ग्रोथ रेट 4.4 प्रतिशत, अमेरिका का 1 प्रतिशत, जापान का 1.6 प्रतिशत, यूरोपीय देशों का 0.5 प्रतिशत और ब्रिटेन का केवल 0.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की तरह विश्व बैंक ने भी भारत के वृद्धि दर का अनुमान वित्त वर्ष 2022-23 केलिए 7.5 प्रतिशत से घटाकर 6.5 प्रतिशत कर दिया है। दक्षिण एशिया पर अपनी वार्षिक रिपोर्ट में विश्व बैंक ने कहा है कि वैश्विक अनिश्चितता और महंगा होते कर्ज के कारण भारत में निजी क्षेत्र का निवेश कम होने का डर है। दुनिया भर में मांग कम होने का असर भी भारतीय निर्यात पर पड़ सकता है। विश्व बैंक के अध्यक्ष डेविड मालपास ने विश्व को आगाह किया है कि-"वैश्विक अर्थव्यवस्था खतरनाक रूप से मंदी की ओर बढ़ रही है।" मालपास ने कहा कि-"मुद्रास्फीति की समस्या है, ब्याज दर बढ़ रही है और विकासशील देशों में जो पूंजी प्रवाह हो रहा था, वह बंद हो गया है। इससे गरीबों पर असर बढ़ रहा है। एक तरफ कर्ज बढ़ रहा है और दूसरी तरफ, उनकी मुद्राएं कमजोर हो रही हैं। मुद्रा के मूल्य में गिरावट कर्ज का बोझ बढ़ा रही है। विकासशील देशों के समक्ष कर्ज संकट की समस्या है। हमने वर्ष 2023 के लिए आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को 3 प्रतिशत से घटाकर 1.9 प्रतिशत कर दिया है। वैश्विक मंदी कुछ परिस्थितियों के अंतर्गत हो सकती है।"

बढ़ती आर्थिक विषमता- कोरोना महामारी के बाद आर्थिक विषमता में तेजी से वृद्धि हुई है। अमीर और गरीब के बीच की खाई और बढ़ी है। निम्न वर्ग और मध्यम वर्ग के करोड़ों लोगों की आय एवं रोजगार घटने से उनकी क्रय-क्षमता और जीवन-स्तर गिरी है। नये और सशक्त लोग इसके दायरे में आये हैं। जबकि देश-दुनियाँ में करोड़पति और अरबपतियों की संख्या तेजी से बढ़ी है। विश्व बैंक ने चेतावनी दी है कि वर्ष 2030 तक विश्व से गरीबी मिटाने का लक्ष्य हासिल करना मुश्किल है। विश्व बैंक के ताजा अनुमान के अनुसार वर्ष 2022 के अंत तक दुनिया में 68.5 करोड लोग बेहद गरीब होंगे। पेरिस स्थित वैश्विक शोध पहल 'वर्ल्ड इनक्वेलिटी लैब' द्वारा दिसंबर, 2021 में जारी विश्व असमानता रिपोर्ट- 2022 के अनुसार, भारत की शीर्ष 1 प्रतिशत आबादी के पास देश की राष्ट्रीय आय का 22 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि नीचे के 50 प्रतिशत आबादी के पास राष्ट्रीय आय का केवल 13 प्रतिशत हिस्सा है। इस तरह, बीच के 49 प्रतिशत आबादी के पास 65 प्रतिशत हिस्सा है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि-"भारत एक समृद्ध अभिजात वर्ग के साथ एक गरीब और असमान देश है। जहाँ सिर्फ 10 प्रतिशत आबादी के पास कुल राष्ट्रीय आय का लगभग 57 प्रतिशत हिस्सा है।" हालांकि, वित्त मंत्री श्रीमति निर्मला सीतारमण ने इस रिपोर्ट को त्रुटिपूर्ण और संदिग्ध बताते हुए सवाल खड़े किए हैं।

भारत में महिला श्रम आय 18.3 प्रतिशत है, जो एशिया के औसत से कम है। वर्ष 2019 में यह 27 प्रतिशत थी। भारतीय वयस्क आबादी की औसत राष्ट्रीय आय रु. 2,04,000 है। निचले स्तर की 50 प्रतिशत आबादी की औसत राष्ट्रीय आय रु. 53600 है। जबकि शीर्ष 10 प्रतिशत आबादी की आय इससे 20 गुना अधिक यानी रु. 11,66,520 है। इस रिपोर्ट को लुकास चांसल द्वारा लिखा गया है और प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी, इमैनुएल सैज एवं ग्रेबियल जुकमैन द्वारा समन्वित किया गया है।

बढ़ती बेरोजगारी- अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार, भारत वर्ष 2023 में आबादी के मामले में चीन को पीछे छोड़ देगा। भारत सरकार और राज्य सरकारें उपलब्ध अपने संपूर्ण कार्य बल को पूर्ण रोजगार देने में हमेशा विफल रहे हैं। बढ़ती जनसंख्या ने इसे और भयावह बना दिया है। बढ़ती जनसंख्या, अदूरदर्शी नीतियां, व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा का अभाव एवं महंगा होना, व्यापक, समुचित एवं सामयिक रोजगार परक प्रशिक्षण की कमी, राजनीतिक संकल्पहीनता, पूंजी और तकनीक का अभाव, औद्योगिकरण की धीमी प्रक्रिया आदि कारणों से दिनों दिन बेरोजगारी की समस्या और विकराल होती जा रही है। सेंटर फ,र म,निटरिंग इंडियन इकोनामी (सीएमआईई) के द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार 15 वर्ष या उससे अधिक के कार्य बल में अक्टूबर, 2022 में भारत में बेरोजगारी दर 7.77 प्रतिशत था। इसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दर क्रमशः 7.21 प्रतिशत और 8.04 प्रतिशत था।

आर्थिक चुनौतियों से निपटने हेतु उठाये गये कदम- वर्तमान आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिए मौद्रिक और राजकोषीय प्रयासों का संयुक्त प्रयोग किया जा रहा है। भारत सरकार ने मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए मई, 2022 में पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क में कटौती किया था। सरकारी तेल विपणन कंपनियों को रसोई गैस के घाटे की भरपाई के लिए 22,000 करोड़ रूपये का आवंटन किया था। सरकार ने गेहूँ, चीनी और अन्य जिंसों की घरेलू कीमतों को कम करने के लिए इसके निर्यात को नियंत्रित कर दिया था। इसके अलावा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी किया गया है। बढ़ती ईंधन कीमतों के लागत को कम करने के लिए अमेरिकी दबाव के बावजूद भारत रूस से भारी मात्रा में ऑफर कीमत पर कच्चे तेल का आयात कर रहा है। ईरान और अन्य तेल उत्पादक देश कम कीमत पर भारत को कच्चा तेल देने के लिए प्रस्ताव दे रहे हैं। भारतीय रिजर्व बैंक अपने मुख्य ब्याज दर रेपो रेट को निरंतर बढ़ा रहा है। पिछले 6 माह में इसे 1.9 प्रतिशत से बढ़ाकर 6.25 प्रतिशत कर चुका है। इससे कर्ज महंगा होगा और चलन में मुद्रा की मात्रा घटाने में मदद मिलेगी।

रुपए की गिरावट को रोकने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी मुद्रा भंडार के इस्तेमाल के अलावा विदेशी पूंजी को आकर्षित करने सहित अनेक कदम उठाए हैं। इसने फॉरेन करेंसी नॉनरेजिडेंट बैंक और नॉनरेजिडेंट एक्सटर्नल रुपए जमा पर ब्याज की दर बढ़ा दी हैं। केंद्रीय बैंक ने भारतीय कंपनियों को बाहर से वाणिज्यिक कर उठान की मात्रा में बढ़ोतरी की है। पांच विदेशी व्यापार पार्टनर के साथ भारतीय रुपया में अंतरराष्ट्रीय व्यापार-विनिमय करने की इजाजत दे दी गई है। इसमें रुपया-रूबल, रूपया-रियाद, रुपया-टका प्रमुख है। इससे डॉलर पर निर्भरता कम होगी। आर्थिक जानकार इसे भारतीय

रुपए के अंतर्राष्ट्रीयकरण की शुरुआत के रूप में देख रहे हैं। केंद्रीय बैंक विदेशी मुद्रा भंडार से लगभग 50 अरब डॉलर रुपए को निकाल कर बाजार में डाल चुका है, ताकि वित्तीय अराजकता और अस्थिरता से बचा जा सके।

भारत विश्व में शांति, स्थिरता और संवाद कायम करने के लिए निरंतर अपील और प्रयास कर रहा है। इससे वैश्विक बाधित आपूर्ति श्रृंखला बहाल हो सकेगी और दुनियाँ की अर्थव्यवस्था बड़े खतरे से बाहर आ जायेगी। मुद्रास्फीति में गिरावट आयेगी, विनिमय दर आदर्श स्थिति में आयेगा और गिरता विकास दर थम जाएगा।

सरकार ने आर्थिक विषमता को कम करने के लिए गरीबों के हितार्थ अनेक कल्याणकारी योजनाओं को चला रखा है। इसमें पारदर्शिता लाने का प्रयास किया गया है। रिसाव को कम करने के लिए तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। भ्रष्टाचार को कम करने एवं लक्षित समूह तक पहुंचने के लिए तंत्र विकसित किया जा रहा है। पात्र लाभार्थी चयन के लिए मैकेनिज्म बनाया जा रहा है। इसमें और तेजी लाने की आवश्यकता है। अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए डीबीटी योजना, पीएलआई योजना, गतिशक्ति योजना, नेशनल जिस्टिक पॉलिसी आदि इनिशिएटिव लिया गया है। केंद्र सरकार ने अगले डेढ़ वर्षों में यानी 2023 के अंत तक देश में 10 लाख सरकारी नौकरियां देने की घोषणा की है। यह ऊंट के मुंह में जीरा के समान है। फिर भी इससे कुछ राहत मिलेगी। इस मोर्चे पर सरकार को तेजी से और बृहत् पैमाने पर कार्य करने की सख्त आवश्यकता है। बेरोजगारी और गरीबी का दाग देश के दामन से मिटाने के लिए कड़ी इच्छाशक्ति और संकल्प की आवश्यकता है। राज्य सरकारों को भी एक विस्तृत कार्य-योजना बनाकर निश्चित समयावधि में रोजगार उपलब्ध कराने के लिए सार्थक प्रयास करना होगा।

अंधेरे में रौशनी दिखाता भारत- वैश्विक उथल-पुथल, बढ़ते भू-राजनीति टकराव, गहराते आर्थिक संकट के बीच पूरी दुनिया भारत की ओर उम्मीद से देख रही है। भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था स्थिर, प्रभावी, दूरदर्शी और संकल्पित नेतृत्व के कारण कोरोना महामारी हो या वर्तमान वैश्विक अवरोध तुलनात्मक रूप से अन्य देशों की अपेक्षा कम प्रभावित हुई है। डॉलर की मजबूती के कारण प्रत्येक देश की मुद्राएं टूट रही है। भारत की मुद्रा अन्य विकसित देशों की मुद्राओं की अपेक्षा कम टूटी है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 18 जुलाई, 2022 को संसद में अपने एक लिखित बयान में रुपए की गिरावट के लिए रूस-यूक्रेन युद्ध, कच्चे तेल की चढ़ती कीमतों और वैश्विक वित्तीय संकट को जिम्मेवार बताया था। उन्होंने बताया कि जापानी येन (20 प्रतिशत), ब्रिटिश पाउंड (13 प्रतिशत), ब्रिटिश पाउंड (11.3 प्रतिशत) के तुलना में भारतीय रुपया महज 6 प्रतिशत टूटा है। मुद्रास्फीति की दर अन्य देशों की अपेक्षा भारत में अब भी कम है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के मुख्य अर्थशास्त्री पियरे ओलिवियर कहते हैं कि-"भारत अपने मानव-संसाधन शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल आदि में निवेश बढ़ाकर 10 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है।" उन्होंने आगे कहा कि-"भारत अपने सड़कों और इमारतों में निवेश कर रहा है, लेकिन यदि वह अपने मानव-संसाधन में निवेश बढ़ाएं तो तेजी से आगे बढ़ेगा।"

भारत में मुद्रास्फीति, बेरोजगारी दर, विनिमय-दर, विदेशी मुद्रा भंडार में ह्रास अन्य देशों की अपेक्षा कम है। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि संभावित वैश्विक मंदी की

आहट से भारत अछूता रहेगा। विश्व के प्रमुख देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं का विकास दर गिरने के बीच भी भारत का विकास दर वर्तमान में सबसे अधिक है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भारत के वृद्धि दर को घटाने के बावजूद यह संभावना व्यक्त की है कि आने वाले समय में भारत दुनिया में सबसे तीव्र गति से आगे बढ़ेगा। आईएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टिना जॉर्जीवा ने कहा है कि-"इस वक्त दुनिया के आर्थिक क्षितिज पर जो अंधकार दीख रहा है, उस में भारत एक प्रकाश पुंज की तरह है।" 30 नवंबर, 2022 को जारी अपनी रिपोर्ट में विश्व बैंक ने कहा है कि भारत को वर्ष 2022 में रेमिटेंस (प्रवासियों द्वारा स्वदेश में भेजी जाने वाली मुद्रा) रिकॉर्ड 100 अरब ड,लर प्राप्त होने की उम्मीद है। यह पिछले वर्ष 2021 के मुकाबले 7.5 प्रतिशत से बढ़कर 12 प्रतिशत पर पहुंच जाएगा। विगत वर्ष 89.4 बिलियन डॉलर का रेमिटेंस भारत आया था। भारत दुनिया में सबसे ज्यादा रेमिटेंस पाने वाला शीर्ष देश है। दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें स्थान पर क्रमशः मेक्सिको (60 बिलियन डॉलर), चाइना (51 बिलियन डॉलर), फिलिपींस (38 बिलियन डॉलर) और इजिप्ट (32 बिलियन डॉलर) हैं।

आईएमएफ का मानना है कि भारत 2027-28 तक जीडीपी के मामले में 5.36 ट्रिलियन डॉलर के साथ विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगा। उस समय अमेरिका का जीडीपी 30.28 ट्रिलियन ड,लर और चीन का जीडीपी 28.25 ट्रिलियन डॉलर हीं भारत से आगे क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान पर रहेंगे। क्रय-शक्ति समता के आधार पर वर्ष 2027- 28 में अमेरिकी अर्थव्यवस्था 42.05 ट्रिलियन डॉलर, चीनी अर्थव्यवस्था 30.28 ट्रिलियन डॉलर और भारतीय अर्थव्यवस्था 17.85 ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी।

मॉर्गन स्टेनली का अनुमान है कि अगले 10 वर्षों में (2031-32 तक) अमेरिका और चीन के बाद भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगा, जो कि अभी पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इस अवधि में प्रति व्यक्ति आय दोगुना से अधिक और शेयर बाजार का मार्केट कैप (पूंजीकरण) 3 गुना हो जाएगा। भारत का जीडीपी इस दौरान 255.5 लाख करोड़ से बढ़कर 639 लाख करोड़ के ऊपर चला जाएगा। साथ हीं, खुदरा बाजार का आकार वर्तमान के 47.64 लाख करोड़ से बढ़कर 62. 87 लाख करोड़ रूपये हो जाएगा। रिपोर्ट बताता है कि आगामी एक दशक में प्रति व्यक्ति आय में 2.3 गुना की बढ़ोतरी होने का अनुमान है। यह वर्तमान के 1.83 लाख रूपये प्रतिवर्ष से बढ़कर 4.22 लाख रूपये प्रतिवर्ष हो जाएगी। जबकि इस अवधि में ब्रिटेन,जर्मनी और फ्रांस में यह डेढ़ गुना ही बढ़ेगी। कुल कामकाजी आबादी में महिलाओं की हिस्सेदारी भी 25 प्रतिशत से बढ़कर 35 प्रतिशत के ऊपर चली जाएगी। नवंबर, 2022 में खुदरा महंगाई घटकर 5.88 प्रतिशत पर आ गई है। यह पिछले 11 महीनों का निम्नतम स्तर है। अनुमान है कि वैश्विक हालात, आपूर्ति-श्रृंखला, घरेलू उत्पादन आदि में सुधार होते हीं महंगाई नियंत्रण में आ जायेगी।

निष्कर्ष और सुझाव- भारत के समक्ष उपस्थित वर्तमान आर्थिक चुनौतियों का मुख्य कारण वैश्विक नीतियां, कोरोना का असर, वर्चस्व की लड़ाई, अंतरराष्ट्रीय तनाव और प्राकृतिक आपदा एवं असंतुलन है। इससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, आयात-निर्यात एवं

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभावित हुए हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका सीमित और तात्कालिक असर पड़ा है। ऐसी संभावना है कि आने वाले समय में भारतीय अर्थव्यवस्था इससे तेजी से आगे निकल जायेगी और अन्य अर्थव्यवस्थाओं के लिए आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करेगी, क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था अंदर से मजबूत है। विशाल बाजार, बढ़ता मध्यमवर्ग, बढ़ते यूनिकार्न, बढ़ते अरबपति, विस्तारित कल्याणकारी योजनाएं, सरकारी सक्रियता, सस्ता श्रम, कम होती गरीबी, डिजिटल क्रांति, निवेशकों का आकर्षक स्थल, अनुकूल नीतियां आदि उम्मीद जगाते हैं। वैश्विक शांति, स्थिरता और आपूर्ति-श्रृंखला पूर्व की तरह बहाल होते हीं अर्थव्यवस्था अपने आदर्श स्थिति में आ जाएगी और हम वर्तमान चुनौतियों से आगे निकल जाएंगे। फिर भी, सरकार को वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उपायों पर जोर देना चाहिए-

- विदेशी मुद्रा-भंडार को गिरने से रोकने और बढ़ाने के लिए सार्थक उपाय करने चाहिए। इसके लिए बफर-स्टॉक या आकस्मिक-कोष बनाया जा सकता है।
- आयात को नियंत्रित और प्रत्यास्थापित करने की जरूरत है। साथ हीं, निर्यात को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और नये बाजारों की संभावना तलाशी जानी चाहिए।
- बढ़ती वैश्विक ईंधन कीमतों में कमी लाने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा पर तेजी से आगे बढ़ना होगा और कीमत में छूट एवं सुविधा दे रहे देशों से कच्चे तेलों के आयात को प्राथमिकता से बढ़ना होगा।
- विदेशी निवेश को आकर्षित करने के और अधिक उपाय करने होंगे।
- वैश्विक अवरोधों को समाप्त करने की दिशा में भारत सरकार को उचित पहल करनी चाहिए और वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ना चाहिए।
- डॉलर पर निर्भरता समाप्त करने के लिए अनेक देशों के साथ रुपया में व्यापार करने के लिए समझौता पर आगे बढ़ना चाहिए।
- आंतरिक शांति, स्थिरता और आधारभूत संरचना के विकास पर काम करना होगा।
- सभी स्तरों पर, सभी संस्थानों में, प्रक्रिया एवं कार्य प्रणाली में उत्पादकता, गुणवत्ता, पारदर्शिता, जबाबदेही और कार्य निष्ठा को लाना एवं बढ़ाना होगा।
- स्मार्ट, शिक्षित, समृद्ध और स्वस्थ गाँव विकसित करने होगे।
- राजनीति और विदेश नीति में राष्ट्र को सबसे ऊपर रखना होगा।
- रोजगार परक शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यापक एवं गुणवत्तापूर्ण व्यवस्था के साथ रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1- इंडिया टुडे, 3 अगस्त, 2022, पृष्ठ सं. 20-29
2- दैनिक हिंदुस्तान, हिंदी संस्करण, मुजफ्फरपुर, दिनांक 15 अक्टूबर, 2022, पेज 01
3- वही, दिनांक 17 अक्टूबर, 2022, पेज 12
4- दैनिक भास्कर, नई दिल्ली संस्करण, दिनांक 12 अक्टूबर, 2022
5- दि प्रिंट, ललित के झा, वाशिंगटन, दिनांक 12 अक्टूबर 2022

6- दि प्रिंट, नई दिल्ली (भाषा) दिनांक 12 अक्टूबर, 2022
7- एबी पी न्यूज, दिनांक 13 अक्टूबर, 2022
8- आदित्य के. राणा, नई दिल्ली, दिनांक 13 अक्टूबर, 2022
9- https://www.aajtak.in/amp/busines
10- https://www.chronicle.india.in.hindi
11- https://m.rbi.org.in
12- https://www.imf.org
13- https://www.worldbank.org
14- https://unemploymentindia.cmie.com

ISSN 0973-3914

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer- Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942
Impact Factor 5.125 (IIFS)
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory © ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205

Centre for Research Studies
REWA (M.P.)

2022

www.researchjournal.in

अंक 37 हिन्दी संस्करण वर्ष - 19 जुलाई-दिसम्बर 2022

आई. एस. एस. एन. 0973-3914

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer-Reviewed Research Journal
UGC Journal No. (Old) 40942
Impact Factor 5.125 (IIFS)
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest
U.S.A. Title Id : 715205

अंक-37	हिन्दी संस्करण	वर्ष-19	जुलाई - दिसम्बर 2022

डॉ. अखिलेश शुक्ल
ऑनरेरी सम्पादक
प्राध्यापक, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड तथा पं. गोविन्द वल्लभ पंत एवार्ड से सम्मानित
akhileshtrscollege@gmail.com

डॉ. संध्या शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
drsandhyatrs@gmail.com

डॉ. गायत्री शुक्ल
अतिरिक्त निदेशक, सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा
shuklagayatri@gmail.com

डॉ. आर. एन. शर्मा
सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा, रीवा
rnsharmanehru@gmail.com

सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा
की मुख्य शोध पत्रिका
म.प्र. सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1973 के अंतर्गत पंजीकृत
पंजीयन क्रमांक 1802, सन् 1997

विषय विशेषज्ञ/परामर्श मण्डल

1. डॉ. अरविंद जोशी, सेवानिवृत आचार्य, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी
arvindvns@outlook.com
2. डॉ. रामशंकर, कुलपति, पं. शम्भूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल
rs_dubey@yahoo.com
3. डॉ. डी. एस. राजपूत, आचार्य, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर
drdiwakarrajeut@rediffmail.com
4. डॉ. बी. के. सिंह, आचार्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी
imdrbrajesh.kv@gmail.com
5. डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सेवानिवृत आचार्य, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा
anjali_apsu@rediffmail.com
6. डॉ. बी. पी. बडोला, सेवानिवृत्त आचार्य, कांगड़ा हिमाचंल प्रदेश
bpbadola@gmail.com
7. डॉ. आभा सक्सेना, सह प्राध्यापक, अग्रसेन कन्या स्वशासी महाविद्यालय वाराणसी
drabhasaxena7@gmail.com
8. डॉ. प्रज्ञा मिश्रा, आचार्य, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट
pragyamishramgcgv@gmail.com
9. डॉ. आशीष सक्सेना, आचार्य, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।
ashish.ju@gmail.com
10. डॉ. ज्योति उपाध्याय, आचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन मध्य प्रदेश
drjyotiupadhyay11@gmail.com
11. डॉ. प्रमिला पुनिया, सह प्राध्यापक, इतिहास, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान
pramilapoonia@rediffmail.com
12. डॉ. मृदुल जोशी, आचार्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
dr_mriduljoshi@yahoo.com
13. डॉ. शैलजा दुबे, प्राध्यापक, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय भोपाल
shailjadubey70@yahho.in
14. डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव, आचार्य, शासकीय कला महाविद्यालय कोटा राजस्थान
dr21pramila@gmail.com
15. डॉ. जयशंकर शाही, आचार्य, अलवर राजस्थान
jayshankarshahi@gmail.com
16. डॉ.एन. पी. त्रिपाठी , सेवानिवृत्त आचार्य, रीवा मध्य प्रदेश
17. डॉ. राजेश भट्ट, एच. एन. बी. केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड
rajeshbhatt11@gmail.com

Guide Lines

- **General:** English and Hindi Editions of Research Journal are published separately. Hence Research Papers can be sent in Hindi or English.
- **Manuscript of research paper:** It must be original and typed in double space on the one side of paper (A-4) and have a sufficient margin. Script should be checked before submission as there is no provision of sending proof. It must include Abstract,Keywords, Introduction, Methods, Analysis, Results and References. Hindi manuscripts must be in Devlys 010 or Kruti Dev 010 font, font size 14 and in double spacing. All the manuscripts should be in two copies and in Email also. Manuscripts should be in Microsoft word program. Authors are solely responsible for the factual accuracy of their contribution.
- **References :** References must be listed cited inside the paper and alphabetically in the order- Surname, Name, Year in bracket, Title, Name of book, Publisher, Place and Page number in the end of research paper as under- Shukla Akhilesh (2018) Criminology, Gayatri Publications, Rewa : Page 12.
- **Review System:** Every research paper will be reviewed by two members of peer review committee. The criteria used for acceptance of research papers are contemporary relevance, contribution to knowledge, clear and logical analysis, fairly good English or Hindi and sound methodology of research papers. The Editor reserves the right to reject any manuscript as unsuitable in topic, style or form without requesting external review.

लेखकों से निवेदन–

- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेज (ISSN-0973-3914) सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज की मुख्य शोध पत्रिका है, जो मानव संसाधन मंत्रालय तथा पंजीयक समाचार पत्र एवं पत्रिका, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा पंजीकृत हैं।
- शोध पत्रिका उलरिच इन्टरनेशनल पीरियाडिकल्स डाइरेक्ट्री प्रोक्वेस्ट, संयुक्त राज्य अमेरिका से इंडेक्स्ड और लिस्टेड हैं।
- शोध पत्रिका का अंग्रेजी एवं हिन्दी संस्करण अलग–अलग प्रकाशित होता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस का प्रकाशन प्रतिवर्ष जून एवं दिसंबर में किया जाता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस को इम्पैक्ट फैक्टर एवं आई.एस.एस.एन प्राप्त हैं। शोध पत्रिका Peer-Reviewed हैं।
- शोध पत्रिका के नवीनतम अंक में प्रकाशित शोध पत्रों को हमारी वेबसाइट www.researchjournal.in (Current Issue) में देखा जा सकता है तथा डाउनलोड किया जा सकता है।
- शोध पत्रिका का प्रिंट एडीशन सदस्यों को अलग से डाक द्वारा भेजा जाता है।
- शोध पत्र में शीर्षक, नाम, पद, पदस्थापना का विवरण, पत्र व्यवहार का पता तथा दूरभाष क्रमांक,
- मोबाइल नं., ई–मेल एड्रेस अवश्य दिया जाये।
- शोध पत्र के प्रारम्भ में कम से कम 50–100 शब्दों का सारांश दिया जाये।
- मुख्य शब्द सारांश के नीचे टाइप कराया जाये।

- शोध पत्र में शोध पद्धति तथा शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- शोध पत्र में निष्कर्ष और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाये। संदर्भ ग्रंथों का विवरण पूरा दिया जाये। लेखक का नाम, वर्ष, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का विवरण, प्रकाशक का स्थान और पृष्ठ संख्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए।
- शोध पत्र माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की फाइल में टाइप किया हुआ होना चाहिए। (नोट- पेज मेकर की फाइल, पी.डी.एफ. फाइल, स्कैन मैटर आदि में कदापि शोध पत्र न भेजें) शोध पत्र हिन्दी लिपि में कृतिदेव या देवलिस फांट 010(फॉन्ट साइज 14, स्पेस डबल, मार्जिन ए-4 साईज के कागज में चारो तरफ 1 इंच) में भेजा जाना चाहिए।
- शोध पत्र के साथ यह घोषणा अवश्य संलग्न करें कि शोध पत्र मौलिक है तथा इसे कहीं अन्यत्र प्रकाशनार्थ प्रेषित नहीं किया गया है।

सर्वप्रथम शोध पत्र ई-मेल द्वारा भेजें-

researchjournal97@gmail.com,
researchjournal.journal@gmail.com

शोध पत्र की स्वीकृति की सूचना सम्पादकीय कार्यालय द्वारा लेखक को ई-मेल एवं दूरभाष द्वारा प्रदान की जाती है।

© सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज

एक अंक रुपये 500.00

-सदस्यता शुल्क -		
अवधि	व्यक्तिगत सदस्यता	संस्थागत सदस्यता
वर्ष एक	2000-00	2500-00
वर्ष दो	2500-00	4000-00

सदस्यता शुल्क की राशि गायत्री पब्लिकेशन्स के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ब्रांच-रीवा सिटी (आईएफएस कोड 0004667 MICR Code 486002003) के खाता क्रमांक 30016445112 में जमा की जाय।

प्रकाशक: गायत्री पब्लिकेशन्स
रीवा- 486001 (म.प्र.)

मुद्रक: ग्लोरी ऑफसेट
नागपुर

संपादकीय कार्यालय
186/1, विन्ध्य विहार कॉलोनी
लिटिल बैम्बीनोज स्कूल कैम्पस
रीवा- 486001 (म.प्र.)
दूरभाष- 7974781746
E-mail- researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com
www.researchjournal.in

रिसर्च जरनल में प्रस्तुत किये गये विचार और तथ्य लेखकों के हैं, जिनके विषय में सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। रिसर्च जरनल के सम्पादन एवं प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु किसी त्रुटि के लिए सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। सम्पादन का कार्य अव्यावसायिक और ऑनरेरी है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र, रीवा जिला रीवा (म.प्र.) रहेगा।

सम्पादकीय

समाज की मूलभूत और सबसे महत्वपूर्ण इकाई प्रारंभ से परिवार ही रहा है। देश के सशक्तिकरण एवं विकास के लिए सबसे पहले परिवार जैसी बुनियादी संस्थाओं के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों पर हमें ध्यान देना अति आवश्यक है। समाज के विकास के लिए परिवार का संतुलित विकास अति महत्वपूर्ण है। अत: हमें यदि देश का संपूर्ण एवं संतुलित विकास करना है तो हमें परिवार नामक बुनियादी संस्था पर सबसे ज्यादा जोर देने की आवश्यकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवार में पुत्र और पुत्री के बीच कोई भी भेदभाव ना करें और यह हम अपने पुत्रों को आवश्यक रूप से समझाएं और उनके क्रियाकलापों में शामिल भी करवाएं। आज भी पुरानी मान्यता के जो लोग हैं, उनका यह मानना है कि औरत को कोई आजादी नहीं मिल सकती, वह अकेले कहीं नहीं जा सकती हैं, वह अकेले कहीं घूम-फिर नहीं सकती हैं, लेकिन इन मूल्यों को आज का युवा मानने से इनकार करता है।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मकान में जो महत्वपूर्ण स्थान दीवालों का का होता है, समाज में वही महत्व लड़कों की शिक्षा का है। लेकिन घर बनता कैसे है? घर के आधार में कौन हैं? घर के आधार में हमारी पुत्रियां हैं, हमारी लड़कियां हैं, अर्थात उनका संबंध जड़ से है। समाज में अगर हमारी जड़ ही कमजोर हो गई तो हमारा घर या मकान बिल्कुल मजबूत नहीं हो सकता है। इस सामाजिक संदर्भ को यथार्थ में समझने की आवश्यकता है।

पक्षपात की हद तो तब हो जाती है जब छोटे छोटे कार्यों में हमें भेदभाव दिखता है। कुछ लोगों ख्याल है कि लड़की पराया धन होती है, उसे कौन सी नौकरी करनी है। इसलिए कुछ मां-बाप लड़के और लड़की में भेदभाव करते हैं और यह भेदभाव हमारे व्यवहार में खिलाने-पिलाने में पहनाने-उढ़ाने में भी कहीं ना कहीं दिखाई देता है। यह सरासर अन्याय है। ईश्वर ने लड़के और लड़कियों को एक जैसा मस्तिष्क दिया है और आज लड़कियां बेहतर परिणाम लाकर यह सिद्ध भी कर रही है।

लड़कियां तो मां-बाप के घर कुछ ही दिन रहती है, इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनके शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण पर गहराई से ध्यान दें, तभी हम एक सशक्त समाज की संकल्पना को पूरा कर सकते हैं। ईश्वर ने हमें हमारे बच्चों का ट्रस्टी बनाया है इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम पूरे न्याय के साथ सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करें क्योंकि लड़के और लड़कियों दोनों में एक जैसी शक्ति है, एक ही आत्मा है। अत: हमें उन्हें विकास का समान अवसर दिया जाना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण का मूलभूत उद्देश्य महिलाओं का विकास और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना हैं। महिला सशक्तिकरण समाज के संपूर्ण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं का सशक्तिकरण सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रघटना है, क्योंकि वे रचनाकार होती हैं। अगर आप उन्हें सशक्त करें, उन्हें शक्तिशाली बनाएं, प्रोत्साहित करें, यह समाज के लिए बेहतर है। महिला और पुरूष सृष्टि निर्माण और मानव समाज के आधार हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक है। ये जीवन रूपी रथ के ऐसे पहिये हैं

जिनसे जीवन-यात्रा सुचारू रूप से संचालित होती है। परिवार और समाज में स्थायित्व के लिए दोनों की ही भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण रही हैं। किसी समाज में परिवर्तन और विकास का आधार पुरूषों और महिलाओं के पारस्परिक मेल-जोल, कदम से कदम मिलाकर चलने और दोनों की समान गतिशीलता पर ही निर्भर है। किसी भी एक पक्ष के पिछड़ने पर सामाजिक जीवन में अराजक स्थिति निर्मित होती है। मानव जाति का इतिहास इसका साक्षी हैं कि जहाँ महिलाओं की उपेक्षा की गई है, वहाँ समाज का विकास अवरूद्ध हुआ है। सृष्टि की रचना, बच्चों की शिक्षा, परिवार की परवरिश के रूप में महिला की भूमिका पुरूष से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होने से समाज रचना में उसकी स्थिति केन्द्रीय हो जाती है। अतः स्त्रियों की उन्नति के बिना मानव जाति और समाज का उत्थान नहीं हो सकता। जहाँ तक भारत का संबंध हैं "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहाँ महिलाओं की पूजा होती है। वहां देवताओं का वास होता है। इस आदर्श के साथ कोई भी भारतीय स्त्री पश्चिमी स्त्री की तुलना में गौरव का अनुभव कर सकती हैं। विद्या का आदर्श सरस्वती में,धन का आदर्श लक्ष्मी में, पराक्रम का आदर्श दुर्गा में, पवित्रता का आदर्श गंगा में, यहाँ तक कि सृष्टि सृजन का आदर्श जगद् जननी के रूप में हमें केवल भारत में ही देखने को मिलता हैं।

(डॉ. अखिलेश शुक्ल)
प्रधान सम्पादक

अनुक्रमणिका

01 वीर सावरकर: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय चरित्र 09
अरुण श्रीवास्तव

02 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखंड की महिलाओं का योगदान 15
राजेश चन्द्र पालीवाल

03 डॉ. लोहिया का सांस्कृतिक चिन्तन: रामायण मेला योजना के विशेष सन्दर्भ में 20
सुधा गुप्ता

04 महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना का समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा जिले के पिनाहट विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में) 25
भूरी सिंह, अतुल कुमार

05 भारतीय जीवन में शिवोपासना का धार्मिक महत्व 30
अशुतोष शुक्ल

06 महात्मा गाँधी : महिला विकास के प्रति दृष्टिकोण 39
सीमा श्रीवास्तव

07 महिला नेतृत्व के साामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण (रीवा जिले की पंचायतों के विशेष संदर्भ में एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन) 44
कोमल पांडे, अखिलेश शुक्ल

08 महिला अपराधिता पुनर्वास एवं जेल व्यवस्था 53
गजानन मिश्र

09 घरेलू हिंसा: वर्तमान समय की गहन समस्या व समाधान 60
अलका रानी

10 भारतीय अर्थव्यवस्था और वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ: एक विश्लेषण 66
बिन्ध्याचल साह

11 नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ 78
सिद्धार्थ मिश्र

12 वैश्वीकरण का सामाजिक- आर्थिक प्रभाव 82
अजय सिंह गहरवार, अवनीश सिंह, महानन्द द्विवेदी

13 सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग क्षेत्र में स्टार्टअप योजना 92
संगीता कुँभारे

14 स्टार्ट अप योजना एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं का सशक्तिकरण:एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 101
कृष्ण कुमार पटेल, एस.एम.मिश्रा

15 सतना जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समस्या एवं समाधान 108
गायत्री देवी, आर. पी. गुप्ता

16 मध्यप्रदेश में कृषि विकास की संभावनाएं एवं चुनौतियां 115
सुनीता सोलंकी

17 पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य (नईगढ़ी-पिपराही के संदर्भ में) 121
वंदना मिश्रा

18	शहडोल संभाग में पर्यटन विकास का पारिस्थितिकी पर प्रभाव **बी. पी. सिंह, सविता पटेल**	127
19	समाज और संस्कृति की विकास यात्रा (भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में) **दिव्या मिश्रा**	133
20	शिव ब्रात है? **अशुतोष शुक्ल**	137
21	श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष योग **प्रत्यूष वत्सला द्विवेदी**	143
22	जैवविविधता और मानवीय क्रियाकलाप (पश्चिमी घाट के विशेष संदर्भ में) **सुनील बाबू विश्वकर्मा, आकृति खरे**	147
23	पराबैंगनी किरणें ओजोन परत को किस तरह प्रभावित करती हैं **मंजरी अवस्थी**	152
24	भारतीय संस्कृति में स्वदेशी खेलो की प्रासंगिकता का महत्व **ममता**	156
25	भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित भावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन **पुरूषोत्तम कुमार साहू, अविनाश कुमार लाल**	166
26	लिंग भेदभाव का महिलाओं के विकास के अवसरों पर पड़ने वाले प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में) **राधा मिश्रा , अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर**	171
27	महिला एवं बाल विकास योजनाओं का ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक स्थिति पर प्रभाव (जिला सतना के विशेष संदर्भ में) **विमलेश द्विवेदी, अखिलेश शुक्ल**	179
28	लैंगिक असमानता के कारण एवं समाधान का समाजशास्त्रीय अध्ययन **राधा मिश्रा, अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर**	188
29	महिला नेतृत्व एवं ग्रामीण विकास (सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में) **शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल**	194
30	बाल मानवाधिकार एवं भारत के समक्ष चुनौतियां **जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार**	198
31	भारत में रोजगार की प्रवृत्तियाँ : महिलाओं के विशेष संदर्भ में **कुमुद श्रीवास्तव**	203
32	पंचायतीराज अधिनियम का प्रभाव महिला नेतृत्व एवं सामाजिक जागरुकता (सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में) **शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल**	210
33	अंतर्राष्ट्रीय विधि के अन्तर्गत बच्चों के शिक्षा के अधिकार: भारत के संदर्भ में **जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार**	117
34	सल्तनकालीन महोबा **महेन्द्र मणि द्विवेदी, रानू चौरसिया**	223